डॉ० कैलाश चन्द्र सैनी
(शिक्षा शास्त्र विभाग)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानितविश्वविद्यालय)
जयपुर परिसर, जयपुर

शिक्षाशास्त्रविभाग

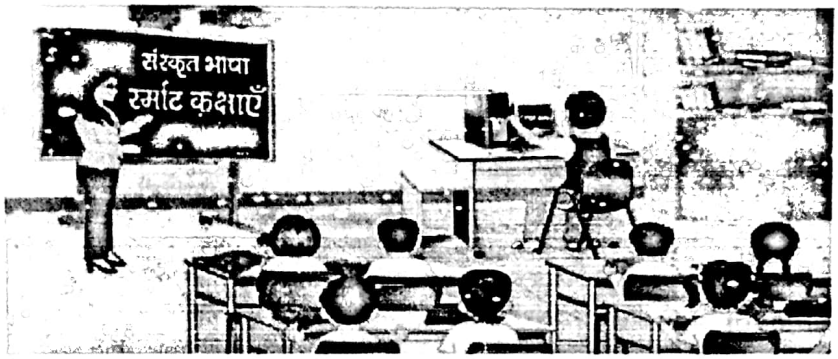

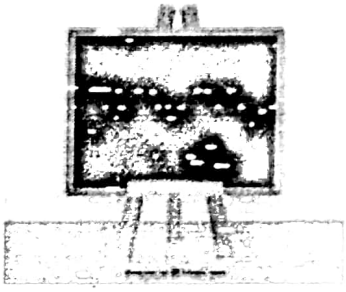

हिन्दी शिक्षण पाठयोजना -

- हिन्दी पद्यशिक्षण पाठयोजना
- हिन्दी कहानी शिक्षण पाठयोजना

Scanned by CamScanner

आदर्श पाठ योजना (पद्य)

विद्यालय - राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मोहनपुरा, जयपुर

कक्षा - VI | विषय: - हिन्दी (पद्य) | दिनांक - ०१/०८/१६

कालांश - I | प्रकरण - नीति-सुधा | दिवस - सोमवार

सामान्योद्देश्य

१. छात्रों के मन में हिन्दी काव्य के प्रति रुचि जागृत करना।

२. श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन कौशलों को विकसित करना।

३. छात्रों में स्वर, लय, प्रवाह एवं भावपूर्ण रीति से कविता पढ़ने की प्रेरणा जागृत करना।

४. काव्य सौन्दर्यानुभूति का सम्पादन करना।

५. छात्रों को काव्य शैली का बोध कराते हुए काव्य रचना की ओर प्रवृत्त करना।

विशिष्टोद्देश्य - (अ) ज्ञानात्मक

१. भाषा तत्वों का ज्ञान - छात्र पाठ में आये नवीन शब्दों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। यथा- कृपण, जतन, जिण, टीपणो आदि।

२. विषयवस्तु का ज्ञान - 'नीति-सुधा' नामक कविता के माध्यम से छात्रों को देशभक्ति, बलिदान, साहस, वीरता इत्यादि से परिचित कराना।

(आ) अवबोधात्मक - छात्र 'नीति-सुधा' नामक पद्यांश में आये नवीन एवं कठिन शब्दों के अर्थ एवं भाव का बोध कर सकेंगे। यथा- टीपणों, सकुन, समर इत्यादि।

Scanned by CamScanner

(इ) अनुप्रयोगात्मक

१. छात्र 'नीति-सुधा' पाठ में आये शब्दों का अनुप्रयोग करेंगे। यथा- जिण रौ खायो अन्न, चढै मुख नूर।

२. छात्र देश हित में त्याग व बलिदान करने की सीख लेते हुए, अपने जीवन को देश के प्रति समर्पित रखेंगे।

(ई) अभिवृत्यात्मकः - छात्रों में देश के प्रति प्रेम उत्पन्न करना।

सहायक सामग्री

श्यामफलक, सुधाखण्ड, मार्जनी, संकेतिका एवं कक्षा कक्ष के सामान्य उपकरण।

विशिष्ट सामग्री

चित्र, आलेख पत्र, प्रत्यक्ष वस्तु प्रदर्शन।

प्रस्तावना :- छात्राध्यापक ज्ञात से अज्ञात की ओर तथा स्थूल से सूक्ष्म की ओर शिक्षण सूत्रों का प्रयोग करते हुए छात्रों के पूर्वज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न पूछेगा। छात्र उत्तर देने का प्रयास करेंगे।

छात्राध्यापक-क्रिया	छात्र-क्रिया
कबिरा संगत साधु की जौ की भूसी खाय। खीर खाँड भोजन मिलै, दुर्जन संग न जाय।। १. प्रस्तुत दोहे में किसका वर्णन हुआ है? २. हमें किसकी संगति से दूर रहना चाहिए? ३. सज्जनों की संगति से क्या लाभ है?	साधु एवं दुर्जन लोगों का वर्णन हुआ है। दुर्जनों की संगति से दूर रहना चाहिए। सज्जन हमें अच्छी बाते बताते हैं, उपदेश देते हैं।

Scanned by CamScanner

४. सज्जन पुरुष किस प्रकार के वचन कहते हैं?	उपदेशात्मक, नीतिपरक, वचन कहते हैं।
५. नीति वचन के विषय में आप क्या जानते हैं?	जिज्ञासात्मक

उद्देश्य कथन

छात्रों आज हम 'नीति-सुधा' नामक कविता के माध्यम से शूरवीर के व्यक्तित्व के विषय में विस्तार से पढ़ेंगे।

प्रस्तुतीकरण -

कृपण जतन धन रो करें, कायर जीव जतन।
सूर जतन उण रो करे, जिण रौ खायो अन्न।।
सूर न पूछे टीपणो, सकुन न देखे सूर।
मरणा नूँ मंगल गिणै, समर चढ़ै मुख नूर।।
सुत मरियो हित देश रे, हरख्यो बंधु समाज।
माँ नहीं हरखी जनम दे, जतरी हरखी आज।।

Scanned by CamScanner

शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक-क्रिया	छात्र-क्रिया	श्यामपट्टकार्य
आदर्शपाठ	छात्राध्यापक उचित गति, यति, लय, स्वरारोह, अवरोह, स्वराघात, बलाघात आदि का ध्यान रखते हुए पद्य का आदर्श पाठ प्रस्तुत करेगा।	छात्रमनोयोगपूर्वक सुनेंगे।	
अनुकरण पाठ	छात्राध्यापक कतिपय छात्रों कां क्रमशः अनुकरण पाठ करने का निर्देश देगा।	छात्राध्यापक द्वारा निर्देशित छात्रों में से कतिपय छात्र अनुकरण पाठ करेंगे, अन्य ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	
अशुद्धि संशोधन	छात्राध्यापक अनुवाचनगत अशुद्धोचरित शब्दों के सही रूप को श्यामपट्ट पर लिखकर छात्रों से उच्चारण करवाकर संशोधन करेगा।	छात्र अशुद्ध उच्चरित शब्दों का शुद्ध उच्चारण करेंगे।	**शब्द** कृपण टीपणो गिणै हरख्यो
काठिन्य निवारण	छात्राध्यापक पद्यांश में आये कठिन शब्दों का अर्थ	छात्र कठिन शब्दों का अर्थ अपनी उत्तर	**शब्द** | **अर्थ** हरख्यो | प्रसन्न

Scanned by CamScanner

	श्यामपट्ट पर लिखेगा तथा छात्रों को शब्दार्थ स्व उत्तर पुस्तिका में लिखने का निर्देश देगा।	पुस्तिकाओं में लिखेंगे।	जिण जिनका टीपणो पंचाग
शब्द कृपण जतन टीपणो हरख्यो	**अर्थ** कंजूस प्रयत्न पंचांग प्रसन्न	**प्रविधि** तत्सम शब्द वाक्य प्रयोग प्रत्यक्ष वस्तु प्रदर्शन अभिनय द्वारा	**प्रयोग** विद्यार्थी प्राय: अच्छी पुस्तकें खरीदने में कृपण होते है। सफलता हेतु जतन करना होगा पंचांग दिखाना प्रश्न का उत्तर आने पर सभी छात्र हरख रहे हैं।
भाव-बोध प्रश्न	छात्राध्यापक कविता के भाव-बोध संबंधी प्रश्न छात्रों से पूछेगा। प्र.१ कायर और कृपण किसका जतन करते हैं? प्र.२ शूरवीर किसे मंगलकारी मानता है?	छात्र प्रश्नों के उत्तर देंगे। उ. कायर जीवन एवं कृपण धन का जतन करना है। उ. शूरवीर देश हित में मरने को ही मंगलकारी मानता है।	

Scanned by CamScanner

	प्र.३ समाज कब हर्षित होता है? प्र.४ माँ की प्रसन्नता किसमें है?	जब कोई शूरवीर देश हित में बलिदान देता है तब समाज हर्षित होता है। पुत्र देश के लिए शहीद हो जाये इसमें ही माँ की प्रसन्नता है।	
पुनः सस्वर पाठ	छात्राध्यापक काव्य सौन्दर्यानुभूति जागृत करने तथा काव्यरसास्वादन करवाने के उद्देश्य से पद्यांश का भावानुसार सस्वर पाठ करेगा।	छात्र मनोयोग पूर्वक सुनेंगे।	
भावविश्लेषणात्मक एवं रसानुभूत्यात्मक प्रश्न तथा स्पष्टीकरण	छात्राध्यापक कविता के प्रत्येक भाव एवं विचार को स्पष्ट करने के लिए प्रश्न पूछेगा और आवश्यकतानुसार स्वयं भी स्पष्टीकरण प्रस्तुत करेगा।	छात्र प्रश्नों के उत्तर देंगे।	

Scanned by CamScanner

	प्र.१ 'जिण रौ खायो अन्न' का क्या अभिप्राय है? **स्पष्टीकरण** - देशभक्त अपने देश का अन्न खाते हैं अत: वे अपने देश के लिए अपने प्राणों को न्योछावर कर देते हैं। वास्तविक रूप में देशभक्त अपने देश के लिए शहीद होकर अपनी मातृभूमि का ऋण चुकाते हैं।	उ. जिसका अन्न खाते है उसके लिए कार्य करना।	
	प्र.२ माँ जन्म देने से अधिक शूरवीर की मृत्यु से क्यों प्रसन्न होती है? **स्पष्टीकरण** - शूरवीर की माँ अपने पुत्र की मृत्यु पर प्रसन्न इसलिए है कि आज उसके पुत्र ने अपने देश के लिए अपने प्राणों का	उ. शूरवीर के शहीद होने से माँ को अधिक खुशी होती है।	

Scanned by CamScanner

	बलिदान कर उसे सच्चा सम्मान प्रदान किया है और एक वीर पुत्र की माता होने से आज उसकी खुशी दोगुनी हो गई है। प्र.३ देशहित प्राणों का बलिदान करने वाले देशभक्तों के नाम बताइए? उ. प्रस्तुत कविता में बताए गए शूरवीरों की तरह अन्य भी शहीद है जिनके बलिदान पर देश को गर्व है। जैसे - भगत सिंह इन्हें अंग्रेजों ने फाँसी की सजा दी और देश भक्ति में ये शहीद हो गए। इस तरह सुखदेव, सुभाषचन्द्र बोस इत्यादि अनेक देशभक्त है।	उ. भगतसिंह, सुभाषचन्द्र बोस आदि।	आलेख पत्र विभिन्न देशभक्तों के चित्र दिखाकर छात्राध्यापक स्पष्टीकरण देगा।

Scanned by CamScanner

पुनः सस्वर पाठ	छात्राध्यापक काव्य सौन्दर्यानुभूति जागृत करने तथा काव्य रसास्वादन करवाने के उद्देश्य से पद्यांश का भावानुसार पुनः सस्वर पाठ करेगा।	छात्र मनोयोग पूर्वक सुनेंगे।	
मूल्यांकन प्रश्न	पढ़ायी गई कविता के भाव को छात्रों ने कितना आत्मसात किया इस हेतु छात्राध्यापक मूल्यांकन प्रश्न पूछेगा। प्र.१ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कोष्ठक में भरिये:- (क) कवि ने सूर किसे कहा है - (अ) किसान को (ब) वीर पुरुष को (स) व्यापारी को (द) राजा को प्र.२ किस प्रकार के बलिदान पर बांधव लोग हर्षित होते है-	छात्र पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देंगे।	

Scanned by CamScanner

	(अ) अकाल मृत्यु पर (ब) देश हित में बलिदान पर (स) दुर्घटना में मृत्यु पर (द) सामान्य मृत्यु पर प्र.३ रिक्त स्थानों की पूर्ति करें - १. सूर न पूछे -------- २. समर चढ़ै -------- ३. सुत मरियो हित ----- ४. ------- बंधु समाज। ५. 'मरणा नूँ मंगल गिणै' पंक्ति का भावार्थ बताइए।	टीपणो मुख नूर देश रे हरख्यो उ. मरने को ही हितकारक मानता है।	
गृहकार्य	स्वाध्याय की आदत के विकास हेतु छात्राध्यापक गृहकार्य देगा। प्र.१ पुस्तकालय से अन्य कवियों के नीतिपरक दोहे एकत्र कर लिखें।	सभी छात्र गृहकार्य स्व-स्व उत्तरपुस्तिकाओं में घर से करके लायेंगे।	

Scanned by CamScanner

पाठ-योजना

विद्यालय का नाम ----------

दिनांक - कक्षा - सप्तमी

दिवस - वर्ग -

विषय - हिन्दी कालांश -

विधा - कहानी अवधि - ३५ मिनट

प्रकरण - लव-कुश

सामान्या उद्देश्य :-

- ❖ छात्रों में श्रवण, भाषण, पठन, लेखन आदि कौशलों का विकास करना।
- ❖ छात्रों में हिन्दी कहानी शिक्षण के प्रति अभिरुचि जागृत करना।
- ❖ छात्रों को हिन्दी कहानी साहित्य का परिचय प्रदान करना।
- ❖ छात्रों में कल्पना शक्ति एवं तर्क शक्ति का विकास करना।

विशिष्ट उद्देश्य -

(अ) ज्ञानात्मक उद्देश्य -

१. भाषा तत्त्वों का ज्ञान :-

छात्र कहानी में आए नवीन शब्दों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे यथा- साहसी, होनहार, महर्षि नित्यप्रति, ललकारना, अनर्थ, सिहरना यज्ञशाला

२. विषय वस्तु का ज्ञान -

छात्र 'लव-कुश' शीर्षक पाठ के माध्यम से वीरता साहस एवं आज्ञा पालन आदि का जीवन में पालन करने की प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे।

Scanned by CamScanner

(ब) अवबोधात्मक उद्देश्य -

१. छात्र कहानी में आए नवीन शब्दों का अवबोध करेंगे।

२. छात्र लव-कुश कहानी के माध्यम से गुरु आज्ञा पालन मातृ उपदेश नित्यकर्म आदि का अवबोध कर सकेंगे।

(स) अनुप्रयोगात्मक उद्देश्य -

१. छात्र पाठ में आए नवीन शब्दों का वाक्यों द्वह्यड्डु प्रयोग कर रचनात्मक शक्ति का विकास करेंगे।

२. छात्र ''लव-कुश'' के समान वीरता साहस आदि का जीवन में आचरण करेंगे।

३. ''लव-कुश'' शीर्षक के समान अन्य कहानियों की रचना कर हिन्दी कथा साहित्य के विकास में योगदान दे सकेंगे।

३. अध्यापन बिन्दु -

१. लव-कुश का परिचय

२. लव-कुश का सैनिक एवं चन्द्रकेतु संवाद

३. लव-कुश का पिता से मिलन

४. शिक्षण विधियाँ -

प्रश्नोत्तर विधि

प्रदर्शन विधि

व्याख्या विधि

Scanned by CamScanner

५. सहायक सामग्री -

(अ) सामान्य सहायक सामग्री श्यामपट्ट, सुधाखण्ड, मार्जनी, सङ्केतिका एवं श्यामफलक आदि।

(ब) विशिष्ट सहायक सामग्री - अश्वमेध यज्ञ के घोड़े का चित्र युद्ध, प्रदर्शन मॉण्डल।

६. पूर्वज्ञान -

छात्र वाल्मीकि आश्रम में उपदिष्ट ''लव-कुश'' के विषय में सामान्यत: जानते हैं।

७. प्रस्तावना -

छात्राध्यापक ज्ञात से अज्ञात की ओर शिक्षण सूत्र का अनुसरण करते हुए छात्रों को पाउोन्मुखी करने के लिए अधोलिखित प्रश्न पूछेगा:-

छात्राध्यापक क्रिया	**छात्र क्रिया**
प्र.१ दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र का नाम क्या था?	उ. दशरथ के जेष्ठ पुत्र का नाम श्रीराम था।
प्र.२ श्रीराम ने कौनसा यज्ञ किया था?	उ. श्रीराम ने अश्वमेघ यज्ञ किया था।
प्र.३ अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को किसने पकड़ा था?	उ. अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को लव-कुश ने पकड़ा था।
प्र.४ लव-कुश की वीरता एवं साहस के विषय में बताइए।	समस्यात्मक प्रश्न

Scanned by CamScanner

उद्देश्य कथन -

छात्रों आज हम ''लव-कुश'' की वीरता एवं साहस के विषय में विस्तार पूर्वक कहानी के माध्यम से अध्ययन करेंगे।

<table>
<tr><th>अध्यापन बिन्दु</th><th>छात्राध्यापक - क्रिया</th><th>छात्र-क्रिया</th><th>श्यामपट्ट</th></tr>
<tr><td>प्रस्तुती-करण अथम अन्विति लव-कुश का जीवन परिचय</td><td>छात्राध्यापक-चित्र दिखाकर कथोपकथन पद्धति एवं प्रश्नोत्तर प्रणाली से कथा सुनायेगा।
लव और कुश ----- यह हमारा है। कुश बोला।</td><td>छात्र ध्यान पूर्वक कहानी को सुनेंगे</td><td></td></tr>
<tr><td>काठिन्य निवारण</td><td>छात्राध्यापक कहानी में आए कठिन शब्दों को श्यामपटट पर लिखकर अर्थ बतायेगा।
<table>
<tr><th>शब्द</th><th>अर्थ</th><th>प्रविधि</th><th>प्रयोग</th></tr>
<tr><td>होनहार</td><td>अच्छे गुणों वाला</td><td>वाक्य प्रयोग</td><td>नरेन्द्र होनहार लड़का है।</td></tr>
<tr><td>साहसी</td><td>योद्धा</td><td>पर्याय विधि</td><td>हिम्मत वाला, निडर, धैर्यवान, वीर, दृढनिश्चयी</td></tr>
</table></td><td>छात्र कठिन शब्दार्थों को अपनी-अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखकर अर्थ समझेंगे।</td><td>होनहार= अच्छे गुणों वाला, साहसी = योद्धा सुसज्जित = सुव्यवस्थित</td></tr>
</table>

Scanned by CamScanner

	सुसज्जित	सुव्यवस्थित	विश्लेषण	सु+सज्जित		
बोधप्रश्न	छात्राध्यापक कहानी की प्रथम अन्वित से कतिपय प्रश्न पूछेगा। प्र.१ लव-कुश कहाँ रहते थे? प्र.२ लव-कुश किस कथा का गान किया करते थे? प्र.३ लव-कुश ने किस घोड़े को पकड़ा?				छात्र मनोयोग पूर्व यथा निर्देश प्रश्नों का उत्तर देंगे। उ. लव-कुश वाल्मीकि आश्रम में रहते थे। उ. लव-कुश रामायण कथा का गान किया करते थे। उ. लव-कुश ने अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को पकड़ा।	
द्वितीय अन्विति लव-कुश का सैनिक एवं चन्द्रकेतु के साथ संवाद	छात्राध्यापक-चित्र दिखाकर कथा के शेष भाग (द्वितीय अन्विति) को सुनायेगा सीता ने भय दिखाते हुए कहा --- अथवा मेरे साथ युद्ध करो।				छात्र कथा को ध्यान पूर्वक सुनेंगे	
काठिन्य निवारण	छात्राध्यापक कहानी के द्वितीय अन्विति में आए कठिन शब्दों के अर्थों को श्यामपट्ट पर लिख कर अर्थ बतायेगा।				छात्र कठिन शब्दार्थों को अपनी-अपनी उत्तर	सिहरना= काँपना अनर्थ-बुरा

Scanned by CamScanner

	शब्द	**अर्थ**	**प्रविधि**	**प्रयोग**	पुस्तिका में	होना
	सिहरना	काँपना	वाक्यप्रयोग	मोहन डर से कॉप उठा	लिखकर अर्थ समझेंगे	ललकारना-चुनौति देना
	अनर्थ	बुरा होना	पर्यायविधि	नुकसान, हानि, गलत होना		
	ललकारना	चुनौती देना	अभिनय विधि			
बोध प्रश्न	छात्राध्यापक द्वितीय अन्विति की कथावस्तु से सम्बन्धित कतिपय प्रश्न पूछेगा प्र.१ सीता किसको बुलाने चली गयी? प्र.२ लव ने किसको ललकारा? प्र.३ लक्ष्मण के पुत्र का नाम क्या है?				छात्र मनोयोग पूर्वक यथा निर्देश प्रश्नों के उत्तर देंगे। उ. सीता महर्षि वाल्मीकि को बुलाने चली गयी। उ. लव ने सैनिक को ललकारा। उ. लक्ष्मण के पुत्र का नाम चन्द्रकेतु है।	
तृतीय अन्विति लव-कुश का पिता से मिलन	छात्राध्यापक कहानी की तृतीय अन्विति को सुनायेगा। लव-कुश बोले ---- वाल्मीकि के नेत्रों से हर्ष के आँसू निकल पड़े।				छात्र कहानी को ध्यान पूर्वक सुनेंगे	

Scanned by CamScanner

<table>
<tr>
<td>काठिन्य निवारण</td>
<td>छात्राध्यापक कहानी के तृतीय अन्विति के कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर अर्थ बतायेगा।
<table>
<tr><th>शब्द</th><th>अर्थ</th><th>प्रविधि</th><th>प्रयोग</th></tr>
<tr><td>मूर्छित</td><td>बेहोश</td><td>कथन विधि</td><td>शल्य क्रिया से पूर्व मरीज को मूर्छित करते है।</td></tr>
<tr><td>कायर</td><td>डरपोक</td><td>पर्याय विधि</td><td>भीरु, साहसहीन</td></tr>
<tr><td>अद्भुत</td><td>अनोखा</td><td>वाक्यप्रयोग</td><td>भगवान विष्णु की अद्भुत लीलाएँ है।</td></tr>
</table>
</td>
<td>छात्र कहानी के तृतीय अन्विति के कठिन शब्दार्थों को अपनी-अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।</td>
<td>मूर्छित = बेहोश, कायर = डरपोक, उद्भुत = अनोखा</td>
</tr>
<tr>
<td>बोधप्रश्न</td>
<td>छात्राध्यापक कहानी के शेष भाग से कतिपय प्रश्न पूछेगा।
प्र.१ लव ने सेना पर कौनसा अस्त्र छोड़ा?
प्र.२ लव-कुश के बाणों से कौन मूर्छित हो गया?
प्र.३ लव-कुश के पिता का नाम क्या है?</td>
<td colspan="2">छात्र मनोयोग पूर्वक प्रश्नों के उत्तर देंगे।
उ. लव ने सेना पर जृम्भकास्त्र छोड़ा।
उ. लव-कुशके बाणों से लक्ष्मण मूर्च्छित हो गया।
उ. लव-कुछ के पिता श्री रामचन्द्र है।</td>
</tr>
<tr>
<td>कथावाचन</td>
<td>छात्राध्यापक छात्रों को सम्पूर्ण कथा का वाचन करने के लिए निर्देश देगा तथा वाचन के समय में कक्षा का निरीक्षण करेगा।</td>
<td colspan="2">सभी छात्र मौनरूप से कथा का वाचन करेंगे।</td>
</tr>
</table>

Scanned by CamScanner

उत्प्रेरणात्मक प्रश्न	छात्राध्यापक अभिप्रेरणात्मक शक्ति जागृत करने के लिए कहानी से कतिपय प्रश्न पूछेगा। प्र.१ कैसे पतां चलता की घोड़ा अश्वमेध यज्ञ का है? प्र.२ राम प्रसन्न क्यों थे? प्र.३ लव-कुश को पुरुषार्थी बनने की शिक्षा किसने दी? प्र.४ महर्षि वाल्मीकि क्यों मुस्कुराए?	छात्र अभिप्रेरणा पूर्वक प्रश्नों के उत्तर देंगे।
कथा निष्कासन	छात्राध्यापक कहानी की विषय वस्तु के अधिगम को परखने के लिए कहानी से कतिपय मूल्यांकन प्रश्न पूछेगा। १. वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही उत्तर को चुनिए - प्र.१ लव-कुश थे - (१) डरपोक (२) भीरु (३) कायर (४) साहसी ( ) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए - प्र.२ लव-कुश का नित्यकर्म --- था। लघूत्तरात्मक प्रश्न - प्र.३ चन्द्रकेतु को किसकी रक्षा का भा सौंपा गया था? प्र.४ मुनि बालकों मेरे अश्व को शीघ्र छोड़ दो यह किसने कहा? प्र.५ सीता क्यों सिहर उठी?	छात्र जागरूक होकर प्रश्नों के उत्तर देंगे
गृहकार्य	१. लव-कुश और सैनिक के संवाद को अपने शब्दों में लिखिए।	

Scanned by CamScanner

लव-कुश

प्रथम अन्विति

लव और कुश बड़े होनहार बालक थे उनका जन्म तमसा नदी के किनारे वाल्मीकि आश्रम* में हुआ था। वे अपनी माता सीता के साथ इसी आश्रम में रहते थे। लव-कुश में क्षत्रिय के सभी गुण विद्यमान थे। वे अस्त्र शस्त्र विद्या में निपूर्ण थे और बड़े वीर और साहसी थे। लव-कुश का रामायण* की कथा का गान करना, गुरु की आज्ञा का पालन करना और मुनि कुमारों के साथ खेलना उनका नित्यकार्य था।

एक दिन आश्रम में एक सुन्दर घोड़ा आ गया उसे लव-कुश ने पकड़ कर पेड़ से बांध दिया। आश्रम के बाहर शोर सुना तो सीता उस तरफ दौड़ी और कुश से पूछा घोड़ा किसका है यहाँ कैसे आ गया? घोड़ा सोने के आभूषणों से सुसज्जित था। उसकी गर्दन में एक स्वर्णपत्र लटक रहा था। स्वर्णपत्र पर अंकित था, यह राजा रामचन्द्र के अश्वमेध* यज्ञ का अश्व है। यह देख कर सीता घबरा गई। सीता ने कहा, इसे शीघ्र छोड दो।

लव ने कहा हम इसे नहीं छोड़ेगे। इसे हमने पकड़ा है। यह हमारा है। कुश बोला।

द्वितीय अन्विति

सीता ने भय दिखाते हुए कहा- इसे छोड़ दो नहीं तो युद्ध होगा। लव ने निडर होकर उत्तर दिया। हम पुरुषार्थी हैं आपने ही तो शिक्षा दी है। सीता धर्म संकट में पड़ गई वह महर्षि वाल्मीकि* को बुलाने चली गयी। क्या पिता पुत्र में युद्ध होगा? सीता अज्ञात अनर्थ की आशंका से सिहर उठी। सीता के जाने के वाद एक सैनिक* आया और पेड़ से बँधे घोड़े की तरफ बढा। लव ने उसे ललकारा घोड़ा मत खोलना। इसे हमने पकड़ लिया है, यह हमारा है। सैनिक बोला अरे यह राजा राम के अश्वमेध यज्ञ का अश्व है। इसे वही पकड़ सकता है जो राम से युद्ध करने को तैयार हो। कुश ने उत्तर दिया हमें भय दिखाता है।

Scanned by CamScanner

सैनिक को बालकों की बातें बाल हठ लगी। वह घोड़ा खोलने के लिए आगे बढ़ा। कुश ने कहा घोड़ा खोलने का प्रयास मत करो। चुप चाप लौट जाओ। सैनिक नहीं माना। सैनिक ने लव-कुश पर एक बाण छोडा। लव ने बाण के दो टुकडे कर दिए। लव-कुश ने सैनिक को हरा दिया।

सामने से एक विशाल सेना आती दिखाई दी। राम ने लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु* को अश्व की रक्षा का भार सौंपा था। चन्द्रकेतु रथ से उतर कर लव-कुश के पास आकर बोला राम के अश्वमेघ के अश्व को छोड़ दो अथवा मेरे साथ युद्ध करो।

तृतीय अन्विति

लव-कुश बोले हम वाल्मीकि के शिष्य है कायर नहीं हैं अश्व को नहीं छोडंगे। हमसे युद्ध करो और छुडा लो। लव ने जृम्भकास्त्र* छोडा। सारी सेना मूर्तिवत हो गयी। इधर सीता महर्षि वाल्मीकि को घटना सुना रही थी कि एक तपस्वी आया और बोला, महर्षि शीघ्रता कीजिए लव-कुश के बाणों से वीर लक्ष्मण* मूर्छित हो गए है। सीता सह सुनते ही व्याकुल हो उठी। महर्षि वाल्मीकि थोड़ा मुस्कुराए और बोले, बेटी दु:खी मत हो, जो हो रहा है शुभ ही है।

अयोध्या में एक सैनिक ने पहुँच कर राम को सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया, यह सुनते हि राम वाल्मीकि आश्रम पहुँचे तो वे दोनों बालकों से बाले मुनि बालको मेरे अश्व को शीघ्र छोड दो। पर बालक कहाँ मानने वाले थे। राम से युद्ध करने को तैयार हो गए। इतने में महर्षि वाल्मीकि सीता को लकर वहाँ पहूँचे। राम को सामने देखकर वाल्मीकि ने लव-कुश से कहा तुम मुझसे अपने पिता के बारे में जानना चाहते थे यही तुम्हारे पिता है, अयोध्या के राजा राम* यह सुनकर लव-कुश को बाहों में भर लिए, इस अद्भुत दृश्य को देखकर वाल्मीकि के नेत्रों में हर्ष के आँसू निकल पड़े।

Scanned by CamScanner